समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

लोक कल्याण सेतु

मूल्य : रु. ३/-
१५ मई २०११
वर्ष : १४ अंक : ११
(निरंतर अंक : १६७)
मासिक समाचार पत्र

...य बापूजी के साथ...



स्वामी रामदेवजी



...ी श्री रविशंकरजी



पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

श्री सत्य साँई बाबा

सत्य साँई बाबा के देहविलय पर पूज्य बापूजी का श्रद्धांजलि-संदेश पढ़ें पृष्ठ-१५



आत्मवत् पश्येत् सर्वभूतेषु।

धर्म रक्षा मंच के सभाध्यक्ष पूज्य बापूजी



अटल बिहारी वाजपेयी, ...लीन प्रधानमंत्री



डॉ. रमेशचंद्र पोखरियाल मुख्यमंत्री (उ.खण्ड)



श्री प्रकाशसिंह बादल मुख्यमंत्री (पंजाब)



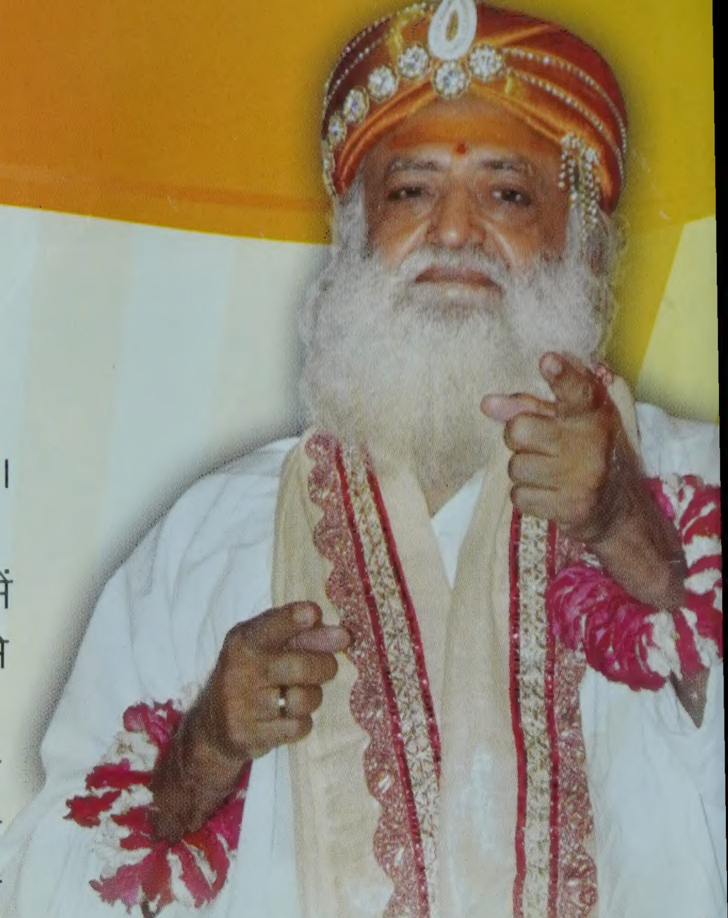
श्री अशोक गेहलोत, मुख्यमंत्री (राज.)



श्री कमलनाथ, केन्द्रीय शहरी विकास मंत्री

जो महापुरुष सबका मंगल-सबका भला चाहते व करते हैं, सभीके प्रति स्नेह रखते हैं, समाज की सेवा एवं उत्थान के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करते हैं ... प्रति सभीको अ...भाव हो जाता है।

चरित्र ही सच्ची सम्पत्ति



यजुर्वेद (२३.१५) में आता है :

स्वयं वाजिँस्तन्वं कल्पयस्व ।

'हे मानव ! शक्तिशालिन् ! अपने जीवन का निर्माण करो। अपने चरित्र को उन्नत बनाओ ।'

पूज्य बापूजी कहते हैं : 'चरित्र की पवित्रता हर कार्य में सफल बनाती है । जिसका जीवन संयमी है, सच्चरित्रता से परिपूर्ण है उसकी गाथा इतिहास के पन्नों पर गायी जाती है।'

व्यक्तित्व का निर्माण चरित्र से ही होता है । बाह्यरूप से व्यक्ति भले ही सुंदर हो, निपुण गायक हो, बड़े-से-बड़ा कवि या वैज्ञानिक हो, चमक-दमक व फैशनवाले कपड़े पहनता हो परंतु यदि वह चरित्रवान नहीं है तो समाज में उसे सम्मानित स्थान नहीं मिल सकता । उसे तो हर जगह अपमान, अनादर ही मिलता है । चरित्रहीन व्यक्ति आत्मसंतोष और आत्मसुख से वंचित रहता है । कवि माघ ने कहा है : 'दुर्बल चरित्र का व्यक्ति उस सरकंडे के समान है जो हवा के हर झोंके पर झुक जाता है ।'

स्वामी शिवानंदजी कहा करते थे : 'मनुष्य-जीवन का सारांश है चरित्र । मनुष्य का चरित्र ही सदा जीवित रहता है । चरित्र का अर्जन नहीं किया गया तो ज्ञान का अर्जन भी नहीं किया जा सकता । अतः निष्कलंक चरित्र का निर्माण करें ।'

चरित्रवान व्यक्ति के आस-पास आत्मसंतोष, आत्मशांति और सम्मान वैसे ही मँडराते हैं, जैसे कमल के इर्द-गिर्द भौंरे, मधु के इर्द-गिर्द मधुमक्खियाँ । चरित्र एक शक्तिशाली उपकरण है जो शांति, धैर्य, स्नेह, प्रेम, सरलता, नम्रता आदि दैवी गुणों को निखारता है । किसी भी नये स्थान पर जाने पर चरित्रवान व्यक्ति अपनी छाप, प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहता । चरित्र उस पुष्प की भाँति है जो अपना सौरभ सुदूर देशों तक फैलाता है । महान विचार तथा उज्ज्वल चरित्रवाले व्यक्ति का ओज चुम्बक की भाँति प्रभावशाली होता है ।

उस समय की बात है जब **स्वामी विवेकानंद** अमेरिका गये हुए थे । वहाँ के लोगों के लिए उनके काषाय वस्त्र व उनका पहनावा कुतूहल का विषय बना हुआ था। एक दिन शिकागो शहर की सड़क पर वे पैदल जा रहे थे तभी पीछे आ रही एक अमेरिकन महिला ने व्यंग्य कसते हुए अपने पुरुष साथी से कहा : ''जरा इन महाशय की इस अजीब पोशाक को तो देखो !'' विवेकानंदजी उस व्यंग्य को सुनकर रुक गये। पीछे मुड़कर उस महिला से बोले : ''देवी ! आपके देश में दर्जी सभ्यता के उत्पादक और कपड़े सज्जनता की कसौटी माने जाते हैं परंतु जिस देश से मैं आया हूँ, वहाँ कपड़ों से नहीं, मनुष्य के चरित्र से उसकी पहचान की जाती है।''

यह सुनकर उस महिला का सिर शर्म से झुक गया । व्यक्ति की महानता उसके कपड़ों से नहीं उसके चरित्र से होती है । विद्यार्थियों को अपने चरित्र पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था : 'अगर कॉलेजी डिग्रियों के बाद भी मनुष्य में सच्चरित्रता, शांति, आध्यात्मिकता नहीं आयी तो इससे तो मैं अनपढ़ रहना पसंद करूँगा ।'

स्वामी लीलाशाहजी भी कहते थे : 'धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ-कुछ गया परंतु चरित्र का नाश हुआ तो सब कुछ नष्ट हो गया । इसलिए बनाने जैसा और सँभालने जैसा तो मात्र चरित्र ही है ।'

चरित्र के बिना जीवन मृतक के समान है । अतः पवित्र और सदाचारी बनो । सत्संग का आश्रय लो, महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़ो और उनके गुणों को जीवन में लाकर चरित्रवान बनो ।

लोक कल्याण सेतु मासिक समाचार पत्र

वर्ष : १४ अंक : ११

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : १६७)

१५ मई २०११ मूल्य : रु. ३/-

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम

प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी

प्रकाशन-स्थल : संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५. (गुजरात)

मुद्रण-स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस 'सुदर्शन', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-३८०००९. (गुजरात)

सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सदस्यता शुल्क :

भारत में : (१) पंचवार्षिक : रु.१००/- (२) आजीवन : रु. ३००/-

विदेशों में : (१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५. (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०/११, ३९८७७७८८.

e-mail : ashramindia@ashram.org ★ web-site : www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

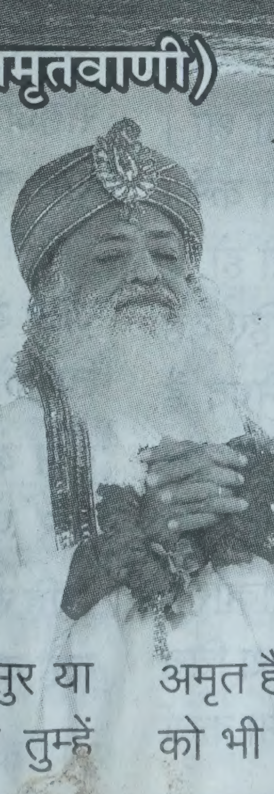
'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

इस अंक में...

संकल्परहित अवस्था सच्चे सुख की जननी

(पूज्य बापूजी की ज्ञानमयी अमृतवाणी)

(गतांक का शेष)



यदि आपका कोई संकल्प फलीभूत हो गया तो उसको सदा के लिए पकड़े रहने से दुःख होता है। एक बार मान मिला, सुविधा मिली तो वैसी ही मिलती रहे, पत्नी या पति द्वारा रुचिकर, अनुकूल कार्य हुए तो वैसे ही होते रहें... ऐसी पकड़ दुःख की जड़ है। पति-पत्नी, सास-ससुर या दामाद नहीं रुलाते, तुम्हारा ही संकल्प तुम्हें रुलाता है। प्रकृति, ईश्वर या गुरु नहीं रुलाते, तुम्हारे संकल्पों की पकड़ ही दुःख देती है। अनुकूल संकल्प फलता है तो सुख की भ्रांति होती है। वास्तव में सच्चा सुख एक बार मिल जाय तो फिर आप दुःखी नहीं हो सकते।

अमृत की पहचान क्या ? मृतक भी जिससे जीवित हो जाय वह अमृत है। असली सुख किसे कहते हैं ? जो दुःख को भी सुख में बदल दे। संत तुकारामजी, संत

कबीरजी, संत ज्ञानेश्वरजी, जड़भरत आदि को दुःख नहीं आये थे ऐसी बात नहीं, लेकिन दुःख उनके पास सुख हो गये। पैसा है, अच्छे संबंध हैं, सुख-सुविधाएँ हैं, ठीक है। इनका उपयोग करो, इनमें आसक्त मत हो। ईश्वर के साथ जो संबंध है, वह मजबूत होता रहे बस ! बाकी के सब संबंध तो टूटेंगे-फूटेंगे, बनेंगे और बिगड़ेंगे।

संकल्पपूर्ति और इच्छा-वासनाओं को पोसने की आदत पड़ गयी है। जैसे अफीम का नशा छोड़ने से तंदुरुस्ती में लाभ होता है, वैसे ही संकल्पपूर्ति छोड़ देंगे तो आत्मशांति मिलेगी और जितनी आत्मशांति रहेगी उतना सामर्थ्य बढ़ेगा और शांति में भी रुके नहीं, शांतिभोग नहीं किया तो फिर परम रस का प्राकट्य होगा। परम रस जीव को तो वांछनीय है ही, ईश्वर भी परम रस के पीछे-पीछे घूमते हैं। गोपियों की अपनी इच्छा नहीं रही, कृष्ण की इच्छा में अपनी इच्छा मिला दी। पतिव्रता स्त्री पति की इच्छा में अपनी इच्छा मिला देती है। सत्शिष्य सद्गुरु की इच्छा में अपनी इच्छा मिला देता है। इससे परम लाभ बड़ी सरलता से हो जाता है। आद्य शंकराचार्यजी को तो कठिन साधना करनी पड़ी। केरल से पैदल चले, ओंकारेश्वर आये, हठयोग, राजयोग, ज्ञानयोग किया। किंतु तोटकाचार्य ने तो केवल शंकराचार्य की इच्छा में अपनी इच्छा मिला दी और सेवा की तो उनको वही मिल गया जो शंकराचार्यजी को मिला था। अपना संकल्प जितना हो सके उतना कम करें। **तेरी मर्जी पूरन हो...** ईश्वर की इच्छा पूरी हो... इससे सामर्थ्य आयेगा और जो होना चाहिए वह स्वतः हो जायेगा। जो अनावश्यक, हानिप्रद है वह रुक जायेगा। आपके शरीर, चित्त, मन और आचरण द्वारा जो होना चाहिए वह होने लगेगा और जो नहीं होना चाहिए वह नहीं होगा। जैसे लावारिस माल सरकार का होता है ऐसे ही अहंकारशून्य चित्त परमात्मा का होता है। उसके द्वारा परमात्मा कार्य करते हैं। उस अंतःकरण से फिर परमात्मा ही लीला करते हैं और लोग उनको संत मानते हैं, भगवान मानते हैं, गुरु मानते हैं और पूजते हैं।

ऐसे अहंशून्य अवस्था की प्राप्ति का प्रयत्न करानेवाले आत्मवेत्ता-ब्रह्मज्ञानी पुरुषों को हजार-हजार प्रणाम हों ! फिर चाहे वे महर्षि वसिष्ठजी हों या भगवान वेदव्यासजी हों, अवधूतजी दत्तात्रेयजी हों अथवा एकनाथजी महाराज हों, एकांत में आत्मानंद लेनेवाले श्री नारायण बापू हों या घाटवाले बाबा हों, जोगी गोरखनाथ हों या योगिनी स्वयंप्रभा हों, महारानी मदालसा हों या विदुषी गार्गी हों, सती अनसूया हों या सती सावित्री हों, कुमारी सुलभा हों या संत कबीर हों, रमण महर्षि हों या रामकृष्ण हों, स्वामी केशवानंद हों या उनके प्यारे सत्शिष्य सद्गुरु लीलाशाहजी भगवान हों, नामी-अनामी, प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध सब आत्मवेत्ता महापुरुषों को पुनः-पुनः प्रणाम हो ! ॐ शांतिः ! ॐ आनंद ! पूर्ण शांति... आत्मानंद !! □

संत वाणी

ज्ञान दीप सतगुरु दियौ, राख्यौ काया कोट।
साजन बसे दुर्जन भजे, निकस गई सब खोट॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, नैना भये अनन्त।
आदि अन्त मध एक ही, सूझि पड़े भगवन्त॥
सहजो गुरु परसन्न ह्वै, मेट्यौ मन सन्देह।
रोम रोम सूँ प्रेम उठि, भींज गई जब देह॥

– संत सहजोबाई

जीव अधम औ कुटिल है, कबहूँ नहिं पतियाय।
ता को औगुन मेटि कै, सतगुरु होत सहाय॥
जन कबीर बंदन करै, केहि बिधि कीजै सेव।
वार पार की गम नहीं, नमो नमो गुरुदेव॥
जेहि खोजत ब्रह्मा थके, सुर नर मुनि अरु देव।
कहै कबीर सुन साधवा, कर सतगुरु की सेव॥

– संत कबीरदासजी

जीवन का अमर फल

चेन्नई निवासी रामानुजम ने अपने पुत्र को पैसे देकर फल लाने के लिए बाजार भेजा। लड़का पैसे लेकर बाजार की ओर चल दिया। रास्ते में वह सोचता जा रहा था कि क्या-क्या फल खरीदेगा। तभी उसने देखा कि रास्ते पर एक गरीब वृद्ध भूख से छटपटा रहा है। उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा है। उस बालक का हृदय द्रवित हो गया। वह तुरंत दौड़ता हुआ बाजार में गया और उसके पास जो पैसे थे उनसे खाने की सामग्री खरीदी और उस गरीब वृद्ध को खिला-पिलाकर तृप्त किया। इससे उस बालक को भी बड़ी आत्मतृप्ति मिली। वृद्ध ने बालक को ढेर सारे आशीर्वाद दिये। वह प्रसन्नमुद्रा में उछलता हुआ सीधे पिताजी के पास ही गया। उसे खाली हाथ आया देखकर रामानुजम ने पूछा : ''अरे, तू फल नहीं लाया ?''



बालक : ''पिताजी ! मैं फल नहीं, अमर फल लाया हूँ।''

''कहाँ है अमर फल ?''

थोड़ा रुककर बालक ने सारी घटना कह सुनायी, फिर बोला : ''पिताजी ! मैं फल ले आता और हम लोग उन्हें खा लेते तो उससे हमें कोई विशेष लाभ नहीं होता। लेकिन उस आदमी को जो कई दिनों से भूखा था, भोजन मिल जाने से उसके पेट की ज्वाला शांत हुई। उसके अंदर बैठा परमेश्वर संतुष्ट हुआ, इससे उत्तम फल हमारे लिए क्या हो सकता है !''

पिता ने गद्गद होकर बेटे को सीने से लगाते हुए कहा : ''मेरे लाल ! सचमुच, तू अमर फल लेकर आया है। तेरे जैसा सुपुत्र पाकर मैं धन्य हो गया। तेरे ये दिव्य गुण एक दिन जरूर तुझे महान बनायेंगे।''

इस धरती पर फलों की प्रजातियाँ अनेक हैं। फलों को खरीदने व बेचनेवाले भी बहुत हैं। लेकिन जो संतों के सत्संग से नश्वर फल को अमर फल में परिवर्तित करने की कला पा लेता है वह खुद संत बन जाता है। आगे चलकर यही बालक दक्षिण भारत के महान संत रंगदासजी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''अगर सदुपयोग करने की कला आ जाय तो कर्म से मिली हुई चीज नश्वर होने पर भी आप शाश्वत के अधिकारी बनने लगेंगे। आधिभौतिक तन और धन का आध्यात्मिकीकरण आपको आत्मानुभूति कराने में सक्षम है।''

आप भाव को जितना उन्नत बनाते हैं, आध्यात्मिक बनाते हैं फल भी उतना ही उन्नत होता जाता है। **भावग्राही जनार्दन।** भगवान भाव के भूखे हैं, ऐसा कहा जाता है। जैसे कोई गरीब है और उसे दयालुता के भाव से 'बेचारा' मानकर कुछ देते हैं तो उससे हमें स्वर्ग के नश्वर भोगों की प्राप्ति होगी। किंतु 'लेनेवाले के अंदर परमेश्वर का निवास है और वह हमें सेवा का अवसर देकर हम पर उपकार कर रहा है'- इस भाव से कृतज्ञ होकर वस्तु देते हैं तो चीज **(शेष पृष्ठ ७ पर)**

सफलता का मूलमंत्र

विदुरजी द्वारा बताये इस मूलमंत्र को यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो हमारे परम सौभाग्य का मार्ग खुलते देर नहीं लगेगी।

उत्थानं संयमो दाक्ष्यमप्रमादो धृतिः स्मृतिः ।
समीक्ष्य च समारम्भो विद्धि मूलं भवस्य तु ॥

'उद्योग, संयम, दक्षता, सावधानी, धैर्य, स्मृति और सोच-विचारकर कार्यारम्भ करना- इन्हें मूलमंत्र समझिये ।'

(महाभारत, उद्योग पर्व : ३९.६८)

उद्योग का स्थूल अर्थ है उद्यम। अपने कार्य में तत्पर रहना चाहिए। व्यक्ति को कर्तव्यपरायण अर्थात् कर्मठ होना चाहिए। जो काम जिस समय करना है उसे उसी समय कर डालना चाहिए, चाहे कार्य छोटा ही क्यों न हो ।

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब ।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब ॥

व्यक्ति को मानसिक परिश्रम के साथ शारीरिक परिश्रम भी करना चाहिए । प्रायः मानसिक परिश्रम करनेवाले व्यक्ति शारीरिक परिश्रम करना छोड़ देते हैं, जिससे कई बीमारियाँ उन्हें आ घेरती हैं। अतः शारीरिक परिश्रम करना ही चाहिए, फिर वह चाहे व्यायाम, दौड़, सेवा आदि कोई भी माध्यम क्यों न हो । आलसी-प्रमादी न होकर कर्तव्यपरायण होना चाहिए।

जो सांसारिक सफलता पाने को ही उद्योग मानते हैं, वे अति तुच्छ मति के होते हैं। वास्तविक उद्योग क्या है ? शरीर से दूसरों की सेवा, कानों से सत्संग-श्रवण, आँखों से संत-भगवंत के दर्शन, मन से परहित-चिंतन, बुद्धि से भगवान को पाने का दृढ़ निश्चय और हृदय में भगवत्प्रेम की अविरत धारा यही वास्तविक उद्योग है ।

दूसरा गुण है संयम । जिसमें इन्द्रियों का संयम, वाणी का संयम, संकल्प-विकल्पों का संयम मुख्य है । इसमें दीर्घ ॐकार का जप बड़ा लाभदायी है, श्वासोच्छ्वास की गिनती बड़ी हितकारी है ।

जिसके जीवन में संयम नहीं है वह पशु से भी गया-बीता है । उसका मनुष्य-जीवन सफल नहीं होता। पशुओं के लिए चाबुक होता है परंतु मनुष्य को बुद्धि की लगाम है। सरिता भी दो किनारों से बँधी हुई संयमित होकर बहती है तो वह गाँवों को लहलहाती हुई अंत में अपने परम लक्ष्य समुद्र को प्राप्त हो जाती है । ऐसे ही मनुष्य-जीवन में संयम के किनारे हों तो जीवन-सरिता की यात्रा परमात्मारूपी सागर में परिसमाप्त हो सकती है ।

दक्षता जीवन का अहम पहलू है । जितना आप कार्य को दक्षता से करते हैं, उतनी आपकी योग्यता निखरती है। यदि आप कोई कार्य कर रहे हैं तो उसमें पूरी कुशलता से लग जाईये । लेकिन व्यावहारिक दक्षता के साथ-साथ आध्यात्मिक दक्षता भी जीवन में आवश्यक है । दो कार्यों के बीच में थोड़ी देर शांत होना चाहिए।

सावधानी यह सबसे महत्त्वपूर्ण सद्गुण है । जीवन में दक्षता आने पर सावधानी सहज रूप से बनी रहती है। कहावत है कि सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी और सावधानी बढ़ी तो दुर्घटना टली। कार्य में लापरवाही सर्वनाश ही लाती है। जिस प्रकार यदि जहाज का पायलट सावधान है तो यात्रियों को गंतव्य तक पहुँचा देगा और यदि उसने असावधानी दिखायी तो उसकी लापरवाही यात्रियों की मृत्यु का कारण बन जायेगी। किसी बाँध के निर्माण में यदि इंजीनियर ने लापरवाही की तो हजारों-लाखों लोगों के जान-माल और लाखों-करोड़ों रुपयों की हानि होगी। जीवन में लापरवाही जैसा और कोई दुश्मन नहीं है।

किसी भी कार्य को करते समय धैर्य रखो।

उतावलेपन से बने-बनाये काम भी बिगड़ जाते हैं । मन को समझाना चाहिए :

बहुत गयी थोड़ी रही, व्याकुल मन मत हो ।
धीरज सबका मित्र है, करी कमाई मत खो ॥

कोई भी कार्य सोच-समझकर करना ही बुद्धिमानी है । कहा गया है :

बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछताय ।
काम बिगाड़े आपनो, जग में होत हँसाय ॥

कार्य के प्रारम्भ और अंत में आत्मविचार भी करना चाहिए । हर इच्छापूर्ति के बाद जो अपने-आपसे ही प्रश्न करे कि 'आखिर इच्छापूर्ति से क्या मिला ?' वह दक्ष है । ऐसा करने से वह इच्छानिवृत्ति के उच्च सिंहासन पर आसीन होनेवाले दक्ष महापुरुष की नाईं निर्वासनिक नारायण में प्रतिष्ठित हो जायेगा। साथ ही यह स्मृति हमेशा बनाये रखनी चाहिए कि 'जीवन में जो भी सुख-दुःख आते हैं वे सब बीत रहे हैं, इन सबको जाननेवाला 'मैं' साक्षी चैतन्य आत्मा सदैव हूँ ।'

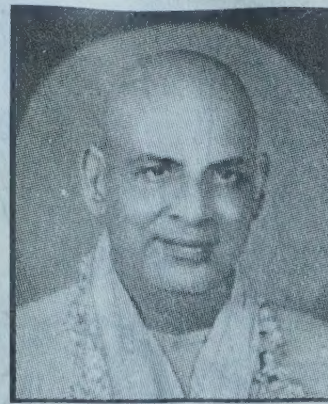
उपरोक्त सात सद्गुणों को जीवन में अपनाना ही सफलता का मूलमंत्र है । ☐

(पृष्ठ ५ का शेष) वही-की-वही होने पर भी अमिट आत्मा-परमात्मा के दिव्य आनंद, आत्मसंतोष, आत्मसुख की प्राप्ति करानेवाली हो जाती है ।

वेदांत-ज्ञान से ओतप्रोत पूज्य बापूजी की जीवनी 'श्री आशारामायण' में भी आता है :

भाव ही कारण ईश है, न स्वर्ण काठ पाषान ।
सत चित आनंदरूप है, व्यापक है भगवान ॥

धन्य हैं पूज्य बापूजी के लाखों-लाखों शिष्य जो इस दिव्य भावना को शिरोधार्य करके अस्पताल के रोगियों, गरीबों, वनवासियों, अनाथों, विधवाओं आदि में फल-वितरण कर ऐसा अमर फल - दिव्य आत्मानंद पा रहे हैं कि जिसको कोई मिटा नहीं सकता । मृत्यु की भी ताकत नहीं कि इसे छीन सके, अपितु यह मृत्यु को ही मार भगाता है और शाश्वत आत्मा में जगा देता है । ☐



गुरुभक्ति-योग

- ब्रह्मलीन स्वामी श्री शिवानंदजी सरस्वती

गुरु के साथ तादात्म्य

✽ गुरु का सत्संग शिष्य का पुनर्जीवन करनेवाला मुख्य तत्त्व है । वह उसे दिव्य प्रकाश देता है और उसके लिए स्वर्ग के द्वार खोल देता है ।

✽ गुरु का संग ही साधक को उसके चारित्र्य के निर्माण में, उसकी चेतना को जागृत करके अपने स्वरूप का सच्चा दर्शन करने में सहाय कर सकता है ।

शिष्य को मार्गदर्शन

✽ गुरु की सेवा, गुरु की आज्ञा का पालन, गुरु की पूजा और गुरु का ध्यान - ये चीजें बहुत महत्त्वपूर्ण हैं । शिष्य के लिए आचरण करने योग्य उत्तम चीजें हैं ।

✽ शिष्य को बार-बार देवी सरस्वती की, जिन्होंने आशीर्वाद दिये हों ऐसे गुरु की एवं सर्वोच्च पिता परमेश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए ।

✽ गुरु के पास अभ्यास पूरा करने के बाद भी समग्र जीवनपर्यंत शिष्य को अपने आत्मज्ञानी सद्गुरु के प्रति कृतज्ञता का भाव बनाये रखना चाहिए ।

✽ गुरु की कृपा तो सदा रहती है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शिष्य को गुरु के वचनों में श्रद्धा रखनी चाहिए और उनके आदेशों का पालन करना चाहिए ।

✽ बुद्धि को तेजस्वी बनाये रखने के लिए स्वाध्याय की आवश्यकता है, जिससे बुद्धि उलटे मार्ग में न जाय या उसका दुरुपयोग न हो । उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण चीज है महात्माओं का सत्संग । अर्थात् हमें गुरु करना चाहिए जिससे हमें निरंतर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे । वे हमें मार्ग में आनेवाले भयस्थान दिखाते रहें । फिर गुरु से प्राप्त ज्ञान की सहायता से शिष्य योग्य पथ पर आगे बढ़ने में सक्षम होगा । ☐

चार बजे तो चार बजे...



बात उस समय की है जब गांधीजी साबरमती आश्रम में थे । एक दिन एक गाँव के कुछ लोग उनके पास आकर कहने लगे : ''बापू ! कल हमारे गाँव में एक सभा हो रही है । यदि आप समय निकालकर जनता को देश की स्थिति व स्वाधीनता के विषय में कुछ मार्गदर्शन देंगे तो बड़ी कृपा होगी ।''

गांधीजी : ''कार्यक्रम का समय क्या है ?''

''शाम चार बजे ।''

गांधीजी ने अपने कल के कार्यक्रम देखकर स्वीकृति दे दी । मुखिया बोला : ''बापू ! मैं आपको लेने के लिए गाड़ी भेज दूँगा ।''

अगले दिन जब पौने चार बजे तक मुखिया का आदमी नहीं पहुँचा तो गांधीजी ने विचार किया कि 'यदि मैं समय से नहीं पहुँचा तो कितने लोगों का समय व्यर्थ ही नष्ट होगा और मैं उन्हें क्या जवाब दूँगा !' वे थोड़े शांत हो गये । उन्हें एक तरीका सूझा और उसीका उन्होंने तुरंत अमल किया । कुछ समय बाद मुखिया गांधीजी को लेने आया परंतु वे वहाँ नहीं मिले । निराश व चिंतित मन से मुखिया सभास्थल पर पहुँचा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा । उसने देखा कि गांधीजी भाषण दे रहे हैं और सभी लोग तन्मयता से सुन रहे हैं ।

भाषण के बाद मुखिया गांधीजी से पूछने लगा : ''मैं आपको लेने आश्रम गया था लेकिन आप वहाँ नहीं मिले, फिर आप यहाँ तक कैसे पहुँचे ?''

गांधीजी : ''जब आप पौने चार बजे तक नहीं पहुँचे तो मुझे चिंता हुई कि मेरे कारण इतने लोगों का समय नष्ट हो सकता है, इसलिए मैंने साइकिल उठायी और तेजी से चलाते हुए यहाँ पहुँच गया ।''

मुखिया शर्म से पानी-पानी हो गया और देर होने के लिए माफी माँगने लगा ।

तब गांधीजी ने कहा : ''समय बहुत मूल्यवान होता है । हमें प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए । किसी भी व्यक्ति की प्रगति में समय महत्त्वपूर्ण होता है । मेरे जैसे साधक के लिए तो समय की पाबंदी जीवन-साधना का अनिवार्य अंग हो जाती है ।'' मुखिया को समय की महत्ता समझ में आ गयी ।

जो समय को बरबाद करता है उसका जीवन भी बरबाद हो जाता है । समय का सदुपयोग करनेवाले का जीवन आबाद हो जाता है। सब कुछ देकर बीते हुए समय का एक क्षण भी वापस नहीं पा सकते हैं ।

विद्यार्थीकाल सद्‌गुणों के उपार्जन, चरित्र-निर्माण व सुषुप्त योग्यताओं को विकसित करने का सुनहरा अवसर है । यदि यह अवसर खो दिया तो फिर जीविकोपार्जन में लगने के बाद इन सबके विकास के लिए कितना समय मिल पायेगा ! किंतु इस बात से अनजान विद्यार्थी प्रायः अपने कीमती समय को टी.वी., सिनेमा आदि देखने में तथा चरित्रभ्रष्ट करनेवाली फालतू पुस्तकें पढ़ने में बरबाद कर देते हैं । बड़े धनभागी हैं वे विद्यार्थी जो मिली हुई समय-शक्ति का सदुपयोग कर अपने जीवन को महानता के पथ पर अग्रसर कर लेते हैं । ❑



एक राजा था। उसके पुत्र, परिवार, मंत्री भी आज्ञाकारी थे। प्रजा भी उसका बहुत आदर रती थी। परंतु वह हमेशा उदास ही रहता था। सके चेहरे से शांति व प्रसन्नता गायब हो चुकी । बुद्धिमान मंत्रियों ने राजा को सलाह दी कि हाराज ! आप कभी-कभी वन-विहार भी किया रें, प्राकृतिक वातावरण में जाने से मन को शांति र आनंद मिलता है।'

राजा को यह बात जँच गयी। एक दिन वह न-विहार के लिए निकल पड़ा। रास्ते में उसने खा कि एक गरीब गड़रिया भेड़ों को चराते हुए ड़ की छाया में बैठा बड़े आनंद से बाँसुरी बजा हा है। राजा को हुआ कि इसके पास कुछ भी हीं है फिर भी यह इतने आनंद में क्यों है ? राजा तुरंत रथ रुकवाया और पास जाकर उसे देखने गा। गड़रिया तो बाँसुरी की मधुर धुन में खोया आ था, उसे राजा के आने का आभास ही नहीं आ। कुछ देर बाद राजा बोला : ''तुम्हारे पास सा क्या खजाना है कि तुम इतने प्रसन्न हो ?''

राजा की आवाज सुन उसकी एकाग्रता टूटी। सने बाँसुरी बजाना बंद कर प्रसन्न मुद्रा में राजा ा अभिवादन किया। फिर मुस्कराते हुए बोला : 'महाराज ! पहले मैं चिंताओं से घिरा, अपनी रीबी व अनपढ़ होने के दुःख में डूबा रहता था, रंतु जब से मुझे गुरुदेव मिले और उनसे दीक्षा मेली तब से मेरे भीतर की दरिद्रता चली गयी। गुरुज्ञान से हर परिस्थिति में सुखी रहने व उसका सदुपयोग करने की युक्ति मिल गयी है। रोज यहाँ आकर भेड़ें चराता हूँ, घर से लायी नमक-रोटी गुरु भगवान का प्रसाद समझकर पा लेता हूँ, झरने का पानी पी लेता हूँ। जब ये भेड़ें चरती हैं तो मैं बाँसुरी की मीठी धुन के साथ परमात्मा की मधुर स्मृति में खो जाता हूँ। इसमें बड़ा आनंद आता है महाराज ! गुरुकृपा से प्रसन्नता तो अपने घर का खजाना हो गयी है। अपना कर्म ईमानदारी से करता हूँ, बाकी का समय ईश्वर-चिंतन में लगाता हूँ। गुरुज्ञान से अब मैंने यह जान लिया है कि परमेश्वर ही आनंदस्वरूप हैं और उनका चिंतन-सुमिरन करनेवाले पर वे अपना आनंद-माधुर्य उड़ेल देते हैं।''

राजा को उसकी बातों से बड़ा आनंद आ रहा था। थोड़ी देर के लिए वह भी हृदय की गहराई में खो गया। जब गड़रिये की बात पूरी हुई तो राजा को उस शांति और प्रसन्नता के आगे अपना विषय-विलास तुच्छ लगने लगा। उसने कहा : ''तू मेरा धन, भोग ले ले और उसके बदले मुझे अपनी शांति और प्रसन्नता दे दे।''

तब गड़रिया खिलखिलाकर हँसा और बोला : ''महाराज ! यदि प्रसन्नता पैसे से खरीदने की वस्तु होती तो मैं दे देता। यदि ऐसा होता तो धनी लोग सबसे अधिक सुखी होते, किंतु बात ऐसी नहीं है। प्रसन्नता तो हृदय की वस्तु है, जो सद्गुरु की शरण जाकर अंतर्यामी हृदयेश्वर का ज्ञान पाने से मिलती है। उस ज्ञान को सुनकर चिंतन-मनन करने से वह स्थायी हो जाती है और ज्ञान को आचरण में लाकर उसके अनुसार जीवन बनाने से वह प्रसन्नता जीवन से ऐसे अभिन्न हो जाती है कि पहाड़ों जैसी विपत्तियाँ भी उसे मिटा नहीं सकतीं।''

उस राजा को प्रसन्नता का राजमार्ग मिल गया। उसने गड़रिये को धन्यवाद दिया और उसे अपने रथ में बिठाकर चल पड़ा उसके गुरु के आश्रम की ओर...। ☐

संस्कार सुरभि

ॐ संत श्री आशारामजी बापू द्वारा प्रेरित बाल संस्कार केन्द्र

संस्कारों की कुंजियाँ मिलतीं बाल संस्कार केन्द्र में

किसी बंधन में बँधे व्यक्ति को मिठाई, धन, सम्पदा देने से बेहतर है उसे बंधन से मुक्त करना। ठीक वैसे ही बच्चों को मनोरंजन के साधन, खेल की सामग्री और मजा-मस्ती की वस्तुएँ उपलब्ध कराने से कहीं अच्छा है कि उन्हें अच्छे संस्कार दिये जायें। कहते हैं : 'पूत कपूत तो काहे धन संचय, पूत सपूत तो काहे धन संचय।'

पूत यदि कपूत है तो उसके लिए धन-संचय क्यों करना, क्योंकि वह उसे तबाह कर देगा। पूत यदि सपूत है तो उसके लिए धन इकट्ठा करने की क्या आवश्यकता, क्योंकि वह सपूत अपने पुरुषार्थ से ही धन अर्जित कर लेगा।

बच्चों को महापुरुषों का सत्संग, दीक्षा, मार्गदर्शन अगर बचपन से ही मिल जाय तो वे सहज में ही उन्नत हो जाते हैं। पूज्य बापूजी के मार्गदर्शन में चलाये जा रहे 'बाल संस्कार केन्द्रों' में बच्चे माता-पिता का आदर करना, परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना, स्वस्थ रहना और अच्छे संस्कार ग्रहण करना सीखकर शीघ्र ही उन्नत होने लगते हैं।

बुद्धि-परीक्षण

१. मेवाड़ की वह कौन महारानी थी जिस[ने] संत रैदासजी से दीक्षा ली थी, श्रीकृष्ण की दीवा[नी] थी और जिसे जहर भी न मार सका था ?

२. बताओ वह कौन बालक था जिसने पाँ[च] वर्ष की उम्र में देवर्षि नारद से मंत्र प्राप्त कर जप तप से भगवान विष्णु को प्रकट कर दिया औ[र] आज भी आकाश में विद्यमान है ?

३. अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची अवंतिका (उज्जैन), द्वारकापुरी - ये सप्तपुरिय[ाँ] किसलिए प्रसिद्ध हैं ? **उत्तर अगले अंक में। (क्रमश:)**

पिछले अंक के बुद्धि-परीक्षण के उत्तर
१. भगवान शंकर २. सूर्यनमस्कार ३. शरद पूर्णि[मा]

श्लोक/मंत्र

स्मरणीय श्लोक :

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।

'सभी सुखी हों, सभी नीरोगी रहें, सभी सबक[ा] मंगल देखें और कोई दुःखी न हो।'

प्रार्थना मंत्र :

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय।

'हे ईश्वर ! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।' □

नेत्रबिंदु से मिली नेत्रज्योति

मैं बापूजी के बाल संस्कार केन्द्र में नियमित रूप से जाता हूँ। वहाँ हमको बहुत अच्छे संस्कार दिये जाते हैं। बहुत दिनों से मेरी आँखों में मोतियाबिंद था। मुझे रात को दिखाई नहीं देता था और मैं चलते-चलते गिर जाता था। मेरे केन्द्र की दीदी ने मुझे नेत्रबिंदु की दो शीशियाँ दीं। उसके प्रयोग की विधि बतायी और कहा कि 'रोज थोड़ी देर पूज्य बापूजी का ध्यान करना। बापूजी से प्रार्थना करना कि मेरी आँखें ठीक कर दीजिये।' मैं रोज गुरुदेव का ध्यान करता। दो माह तक दवा डाली। पूज्य बापूजी की कृपा से मेरी आँखें ठीक हो गयीं। मैं अच्छी तरह देख सकता हूँ तथा रात्रि में भी निर्भयता से साइकिल चलाता हूँ। पूज्य बापूजी का ध्यान करने से अंतर के नेत्र ठीक हो रहे हैं और नेत्रबिंदु से बाह्य नेत्र ठीक हो गये। पूज्य बापूजी के शिविरों में इन नेत्रबिंदुओं का हजारों की संख्या में निःशुल्क वितरण किया जाता है। मेरी तरह न जाने कितने गरीब, असहाय लोग इससे लाभ ले रहे हैं ! सबका मंगल चाहनेवाले दयालु दाता पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में मेरे शत-शत प्रणाम ! - तरुण वैरागी, छोटी खैरी, हनुमान घाट, मंडला (म.प्र.).

बाल संस्कार केन्द्रों के लिए जून माह का पाठ्यक्रम

प्रथम सप्ताह : 'स्वातंत्र्य का मार्ग' ('जीवन विकास' पुस्तक, पृ. ३९) प्रसंग से स्वतंत्र तथा उच्छृंखल व्यक्ति कौन है ? बताइये ।

दूसरा सप्ताह : 'इन्द्रिय विजय : 'सुख व सामर्थ्य का स्रोत' ('जीवन विकास', पृ. ३९) प्रसंग में वर्णित केवल वैज्ञानिक विश्लेषण एवं मनोविज्ञान की बातों को समझाइये ।

तीसरा सप्ताह : 'जाग मुसाफिर' ('जीवन विकास', पृ. ४८) कथा में किस प्रकार शेख वाजिद अली ईश्वरप्राप्ति के रास्ते चल पड़े, बतायें ।

चौथा सप्ताह : केन्द्र-प्रवृत्ति : (१) जिन क्षेत्रों में वर्षा ऋतु शुरू हो रही हो, वहाँ केन्द्र शिक्षक तुलसी के पौधे बच्चों से उनके अपने घर एवं आस-पड़ोस में लगवा सकते हैं (तुलसी प्रायः नर्सरी से निःशुल्क मिल सकती है अथवा बीज डालकर अंकुरित कर सकते हैं) ।

(२) कक्षा-८ के या इससे बड़े विद्यार्थियों की (भाई-बहनें अलग-अलग) 'दिव्य प्रेरणा -प्रकाश' एवं 'युवाधन' विषय पर सामूहिक चर्चा रखें ।

इस माह सिखायें : आसन - 'वृक्षासन, पादपश्चिमोत्तानासन' ('योग व उच्च संस्कार' वि.सी.डी. से), मुद्राएँ - 'शून्य मुद्रा, प्राण मुद्रा, वायु मुद्रा' ('जीवन विकास', पृ. ८०, ८२)

कंठस्थ करवायें : ६ से १० वर्ष के बच्चों के लिए प्रार्थना - 'हे प्रभु ! आनंददाता !...' व 'गुरुवंदना' तथा ११ से १५ वर्ष के बच्चों के लिए 'संत मिलन को जाइये' की पाँच-पाँच साखियाँ कहते हुए इस माह में पूरा पाठ याद करवायें ।

खेल : (१) महाजयजयकार, चक्रव्यूह ('महाजयजयकार हो' वि.सी.डी. से)

*** जीवन रसायन पहेली ***

('जीवन रसायन' पुस्तक से ११ से २० तक के सूत्रों पर आधारित)

सही मिलान कीजिये :

१. ईश्वर से विमुख : (क) समता अपनी बनी रहे
२. खोज करो तो : (ख) बाहरी सुख की इच्छा
३. शाप भी आशीर्वाद बने : (ग) दुःखों का सामना
४. ईश्वर स्वयं आयेंगे : (घ) तत्त्ववेत्ता महापुरुष
५. प्रलोभनों में तटस्थ : (ङ) संसार का सिरमौर

***

भगवान बनो

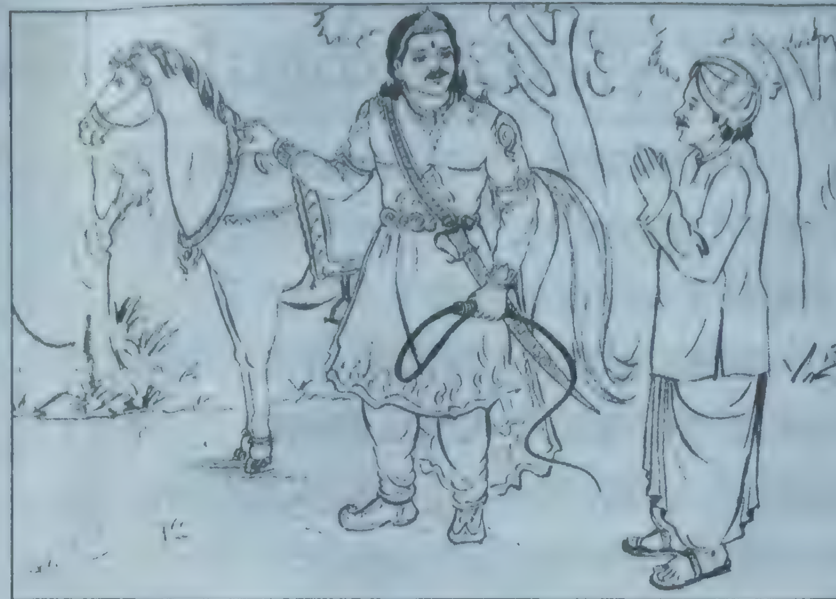
इस खेल में शिक्षक ताली बजाते हुए कीर्तन करेंगे तथा बच्चे ठीक उसी प्रकार दोहरायेंगे। जैसे : **श्रीराम जय राम जय जय राम-२, रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम । श्रीराम जय ...**

कीर्तन कराते समय भिन्न-भिन्न प्रकार से तालियाँ बजायें, जैसे पहले दो, फिर तीन थाप देकर, हाथ ऊपर करके, दोनों ओर हाथ करके आदि। कीर्तन की गति भी पहले तेज कराकर फिर धीरे कराते हुए अंत में केवल होंठों के इशारे से बोलते हुए बच्चों को शांत करा दें, फिर उनसे कहें कि 'चलो, हम अपने इष्ट या भगवान की मूर्ति बन जायें। जैसे भगवान की मूर्ति के सामने प्रसाद रखते हैं तो भी, और शोर होता है, हिलचाल होती है तो भी वह मूर्ति विचलित नहीं होती, वैसे ही हम भी होते जायेंगे।' ऐसा कहकर उन्हें शांत होने के लिए प्रोत्साहित करते जायें। अंत में 'भावातीत ध्यान' जैसी शांत ध्यान में तल्लीन करनेवाली एमपी३ भी चला सकते हैं (जिसमें बंसीनाद ध्यान विशेष उपयोगी है)। इस प्रकार बच्चों को खेल-खेल में ध्यान में ले जा सकते हैं।

सीख : अंत में बच्चों को बतायें कि खेल-खेल में भगवन्नाम लिया और शांत होते गये तो आप सब कुछ समय के लिए भगवत्स्वरूप हो गये। यदि प्रतिदिन हम मीरा, प्रह्लाद के समान पूर्ण भक्तिभाव से भगवान का नाम लेते जायेंगे तो हम अपने भगवत्स्वरूप का पूर्ण अनुभव करके भगवत्प्राप्त महापुरुष बन सकते हैं। ❑

स्वावलम्बी बनो

- पूज्य बापूजी



अपनी दिव्य संस्कृति भूलकर हम विदेशी कल्चर के चक्कर में फँस गये हैं। लॉर्ड मैकाले की कूटनीति ने भारत की शक्ति को क्षीण कर दिया है।

मैकाले जब भारत देश में घूमा तब उसने देखा कि भारत के संतों के पास ऐसी यौगिक-शक्तियाँ, योगविद्या व आत्मविद्या है, ऐसा मंत्र-विज्ञान है कि यदि भारत का एक नौजवान भी संतों से प्रेरणा पाकर उनके बताये मार्ग पर चल पड़ा तो ब्रिटिश शासन को उखाड़कर फेंक देने में सक्षम हो जायेगा।

इसलिए मैकाले ने सर्वप्रथम संस्कृत विद्यालयों और गुरुकुलों को बंद करवाया और अंग्रेजी स्कूल शुरू करवाये। हमारे गृह-उद्योग बंद करवाये और शुरू करवायीं फैक्टरियाँ।

पहले लोग स्वावलम्बी थे, स्वाधीन होकर जीते थे; उन्हें पराधीन बना दिया गया, नौकर बना दिया गया। धीरे-धीरे विदेशी आधुनिक माल भारत में बेचना शुरू कर दिया गया। जिससे लोग अपने काम का आधार यंत्रों पर रखने लगे और प्रजा आलसी, पराश्रित, दुश्चरित्र, भौतिकवादी बनती गयी। इसका फायदा उठाकर ब्रिटिश हम पर शासन करने में सफल हो गये।

एक दिन एक राजकुमार घोड़े पर सवार होकर घूमने निकला था। उसे बचपन से ही भारतीय संस्कृति के पूर्ण संस्कार मिले थे। नगर से गुजरते वक्त अचानक राजकुमार के हाथ से चाबुक गिर पड़ा। राजकुमार स्वयं घोड़े से नीचे उतरा और चाबुक लेकर पुनः घोड़े पर सवार हो गया। यह देखकर राह से गुजरते लोगों ने कहा : ''मालिक ! आप तो राजकुमार हो। एक चाबुक के लिए आप स्वयं घोड़े पर से नीचे उतरे ! हमें हुक्म दे देते !''

राजकुमार : ''जरा-जरा से काम में यदि दूसरे का मुँह ताकने की आदत पड़ जायेगी तो हम आलसी, पराधीन बन जायेंगे और आलसी, पराधीन मनुष्य जीवन में क्या प्रगति कर सकता है ! अभी तो मैं जवान हूँ। मुझमें काम करने की शक्ति है। मुझे स्वावलम्बी बनकर दूसरे लोगों की सेवा करनी चाहिए, न कि सेवा लेनी चाहिए। यदि आपसे चाबुक उठवाता तो सेवा लेने का बोझा मेरे सिर पर चढ़ता।''

हे भारत के नौजवानो ! संकल्प करो कि 'हम स्वावलम्बी बनेंगे।' नौकरों तथा यंत्रों पर कब तक आधार रखोगे ! हे भारत की नारी ! अपनी गरिमा भूलकर यांत्रिक युग से प्रभावित न हो ! श्रीरामचन्द्रजी की माता कौशल्यादेवी इतने सारे दास-दासियों के होते हुए भी स्वयं अपने हाथों से अपने पुत्रों के लिए पवित्र भोजन बनाती थीं। तुम भी अपने कर्तव्यों से च्युत मत होओ। किसीने सच ही कहा है।

स्वावलम्बन की एक झलक पर।
न्यौछावर कुबेर का कोष ॥ ❐

व्यर्थ है...

जिस प्रकार गुण न हो तो रूप व्यर्थ है,
उपयोगी न हो तो उत्पादन व्यर्थ है,
परहित न हो तो धन व्यर्थ है,
भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है,
साहस न हो तो हथियार व्यर्थ है,
होश न हो तो जोश व्यर्थ है,
ठीक उसी प्रकार सद्गुरु की सेवा, भक्ति व सत्संग न हो तो जीवन व्यर्थ है।

स्वास्थ्य के कुछ घरेलू प्रयोग

✽ शक्कर, भुना जीरा तथा पुदीने को पीस ... पानी में घोलकर पीने से गर्मियों में ठंडक ...लती है।

✽ आम की ...ठली के बारीक पाउडर ... मंजन करने पर पायरिया तथा ...ाँतों के अन्य विकार नष्ट हो जाते हैं।

✽ छाती में दर्द होने पर गाजर के रस में ...हद मिलाकर सेवन करने से बहुत लाभ होता ..., लेकिन रस उबली हुई गाजरों का ही निकालें।

✽ कान बहता हो या दर्द करता हो तो प्याज ...ा रस गुनगुना करके ४-५ बूँद डालने से शीघ्र ...ाराम होता है।

✽ प्याज और अदरक का रस मिलाकर ...िलाने से उलटी बंद हो जाती है।

✽ मुलतानी मिट्टी में आलू का रस मिलाकर ...नाये गये लेप को चेहरे पर लगाने से त्वचा में ...िखार आता है।

✽ भोजन के बाद थोड़ी सौंफ चबाने से मुँह ... छालों में आराम मिलता है।

✽ दमे के रोगी के लिए करेले की सब्जी ...हुत लाभकारी है।

✽ धोये हुए चावल का पानी मिश्री मिलाकर ...ेवन करने से पेचिश, अतिसार व प्रदर रोग में ...ाभ होता है।

✽ नींबू के रस में नमक मिलाकर दाँत साफ ...रने से वे चमकदार बने रहते हैं। इसे सिर्फ दाँतों पर ही लगायें, मसूड़ों पर नहीं।

✽ आँवले तथा आम की गुठली को पीस लें, पानी में उसका पेस्ट बना के बालों में लगाने से वे असमय सफेद नहीं होते।

✽ नमक व काली मिर्च के मिश्रण से दाँत माँजने से मुँह से बदबू नहीं आती।

✽ पके पपीते में नींबू का रस डालकर सेवन करने से बदहजमी दूर होती है।

✽ लहसुन के रस में कपूर मिलाकर मालिश करने से जोड़ों के दर्द में आराम होता है।

✽ पैर ऐंठ जायें तो सहनीय गर्म पानी में नमक डालकर कुछ देर रखने से आराम मिलता है।

✽ पका केला भुने जीरे के साथ खाने से नींद अच्छी आती है।

✽ सदैव ही खाँसी-जुकाम रहता हो तो प्रतिदिन खाली पेट कम मात्रा में गुनगुने पानी का सेवन करने की आदत डालें।

✽ अदरक, दालचीनी व तुलसी की कुछ पत्तियाँ डालकर चाय बनाकर पीने से गले की खराश ठीक होती है (इसमें दूध नहीं डालें)।

✽ जिस स्थान पर काँटा चुभा है, वहाँ थोड़ी-सी हींग रगड़ दें, काँटा निकल जायेगा।

✽ देसी घी में हल्दी या तुलसी का पत्ता डाल देने से लम्बे समय तक उसकी सुगंध नहीं जाती। ❐

संत वाणी

...ुजन सुतरु बन ऊख सम खल टंकिका रुखान।
...रहित अनहित लागि सब साँसति सहत समान॥

सज्जन पुरुष सुंदर (लाभकारी) कपास और ...ऊख के पौधे के समान हैं और ...दुर्जन टाँकी और रुखानी (बढ़ई ...के लोहे के औजार) के समान। ...सज्जन और दुर्जन दोनों ही ...समान रूप से कष्ट सहते हैं, परंतु सज्जन सहते ...हैं परहित के लिए और दुष्ट दूसरों के अहित के लिए।

अवसर कौड़ी जो चुकै बहुरि दिएँ का लाख।
दुइज न चंदा देखिऐ उदौ कहा भरि पाख॥

आवश्यकता के समय मनुष्य यदि कौड़ी देने में भी चूक जाय तो फिर (अनावश्यक, बिना मौके) लाख रुपया देने से भी क्या होता है ! द्वितीया के चन्द्रमा को न देखा जाय तो फिर पक्ष भर चन्द्रमा उदय होता रहे, उससे क्या होगा ! – **संत तुलसीदासजी**

पूज्यश्री के सत्संग में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी के उद्गा



''पूज्य बापूजी के भक्तिरस में डूबे हुए श्रोता भाई-बहनो !

मैं यहाँ पर पूज्य बापूजी का अभिनंदन करने आया हूँ... उनका आशीर्वचन सुनने आया हूँ... भाषण देने या बक-बक करने नहीं आया हूँ। बक-बक तो हम करते रहते हैं। बापूजी का जैसा प्रवचन है, कथा-अमृत है, उस तक पहुँचने के लिए बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। मैंने पहले उनके दर्शन पानीपत (हरि.) में किये थे। वहीं पर रात को पानीपत में पुण्य-प्रवचन समाप्त होते ही बापूजी कुटीर में जा रहे थे, तब उन्होंने मुझे बुलाया। मैं भी उनके दर्शन और आशीर्वाद के लिए लालायित था। संत-महात्माओं के दर्शन तभी होते हैं, उनका सान्निध्य तभी मिलता है जब कोई पुण्य जागृत होता है।

इस जन्म में मैंने कोई पुण्य किया हो इसका मेरे पास कोई हिसाब तो नहीं है किंतु जरूर यह पूर्वजन्म के पुण्यों का ही फल है जो बापूजी के दर्शन हुए। उस दिन बापूजी ने जो कहा, वह अभी तक मेरे हृदय-पटल पर अंकित है। देश भर की परिक्रमा करते हुए जन-जन के मन में अच्छे संस्कार जगाना, यह एक ऐसा परम राष्ट्रीय कर्तव्य है, जिसने हमारे देश को आज तक जीवित रखा है और इसके बल पर हम उज्ज्वल भविष्य का सपना देख रहे हैं... उस सपने को साकार करने की शक्ति-भक्ति एकत्र कर रहे हैं।

पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागर का शंखनाद कर रहे हैं, सर्वधर्म-समभाव की शि दे रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं तथा अच्छे और बुरे भेद करना सिखा रहे हैं।

हमारी जो प्राचीन धरोहर थी और जिसे ह लगभग भूलने का पाप कर बैठे थे, बापूजी हमा आँखों में ज्ञान का अंजन लगाकर उसको फिर हमारे सामने रख रहे हैं। बापूजी ने कहा कि ईश्व की कृपा से कण-कण में व्याप्त एक महान शवि के प्रभाव से जो कुछ घटित होता है, उसव छानबीन और उस पर अनुसंधान करना चाहिए

शुद्ध अंतःकरण से निकली हुई प्रार्थना को प्र अस्वीकार नहीं करते, यह हमारा विश्वास हो चाहिए। यदि अस्वीकार हो तो प्रभु को दोष देने बजाय यह सोचना चाहिए कि क्या हमारे अंतःकर में उतनी शुद्धि है जितनी होनी चाहिए ? शुद्धि व काम राजनीति नहीं कर सकती. अशुद्धि का का भले कर सकती है। पूज्य बापूजी ने कहा कि जीव के व्यापार में से थोड़ा समय निकालकर सत्संग आना चाहिए। पूज्य बापूजी उज्जैन में थे तब मे जाने की बहुत इच्छा थी लेकिन कहते हैं न दाने-दाने पर खानेवाले की मोहर होती है, वैसे संत-दर्शन के लिए भी कोई मुहूर्त होता है। आ वह मुहूर्त आ गया है। यह मेरा क्षेत्र है। पूज्य बापू ने चुनाव जीतने का तरीका भी बता दिया है।

आज देश की दशा ठीक नहीं है। बापूजी व प्रवचन सुनकर बड़ा बल मिला है। हाल में ह लोकसभा अधिवेशन के कारण थोड़ी-बहुत निराश पैदा हुई थी किंतु रात को लखनऊ में पुण्य-प्रवच सुनते ही वह निराशा भी आज दूर हो गयी। बापू ने मानव-जीवन के चरम लक्ष्य मुक्ति-शक्ति व प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ चतुष्टय, भक्ति के लि समर्पण की भावना तथा ज्ञान, भक्ति और क

ीनों का उल्लेख किया है। भक्ति में अहंकार का कोई स्थान नहीं है। ज्ञान अभिमान पैदा करता है। भक्ति में पूर्ण समर्पण होता है। १३ दिन के ासनकाल के बाद मैंने कहा : 'मेरा जो कुछ है, ेरा है।' यह तो बापूजी की कृपा है कि श्रोता को क्ता बना दिया और वक्ता को नीचे से ऊपर चढ़ा देया। जहाँ तक ऊपर चढ़ाया है वहाँ तक ऊपर ना रहूँ, इसकी चिंता भी बापूजी को करनी पड़ेगी।

राजनीति की राह बड़ी रपटीली है। जब नेता गिरता है तो यह नहीं कहता कि मैं गिर गया बल्कि कहता है : 'हर-हर गंगे।' बापूजी का प्रवचन सुनकर ड़ा आनंद आया। मैं लोकसभा का सदस्य होने के नाते अपनी ओर से एवं लखनऊ की जनता की ओर से बापूजी के चरणों में विनम्र होकर नमन करना चाहता हूँ। उनका आशीर्वाद हमें मिलता रहे, उनके आशीर्वाद से प्रेरणा पाकर, बल प्राप्त करके हम कर्तव्य के पथ पर निरंतर चलते हुए परम वैभव को प्राप्त करें, यही प्रभु से प्रार्थना है।''

– श्री अटल बिहारी वाजपेयी

तत्कालीन प्रधानमंत्री, भारत सरकार।

हर प्रकार का बल मिला

''परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त करके मैं धन्य हुआ हूँ। मैं इस देवभूमि उत्तराखंड में, देवतात्मा हिमालय व गंगा के प्रदेश में पूज्य बापूजी के चरणों में प्रणाम करता हूँ और उनका अभिनंदन करता हूँ। मैं आप सभी सत्संगियों का भी अभिनंदन और स्वागत करता हूँ, जो देश और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से यहाँ पूज्य बापूजी के चरणों में माँ गंगा के तट पर आये हो।

पूज्य बापूजी ! आप ही के आशीर्वाद से इतना बड़ा कुंभ का कार्यक्रम बहुत ही अच्छे तरीके से सम्पन्न हुआ है। इसकी सम्पन्नता के लिए आपका आशीर्वाद, मार्गदर्शन और हर प्रकार का बल हम लोगों को मिला है। इसके लिए मैं आपके चरणों में अपना प्रणाम निवेदित करता हूँ।

वेदों का विभाजन करनेवाले भगवान वेदव्यासजी, आयुर्वेद के महान आचार्य चरक, जिन महापुरुष के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा उन भरत की तथा माँ गंगा की अवतरण-स्थली इस प्रदेश में आप बार-बार आयें और हमें आपका आशीर्वाद मिलता रहे - यह मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ। यह धरती देवभूमि है। यहाँ का जो भी संदेश आपके मुखारविंद से जायेगा वह पूरी दुनिया में जायेगा और उससे हम लोगों को ताकत मिलेगी।

एक बार पुनः उत्तराखंड सरकार एवं यहाँ की जनता की ओर से मैं आपका अभिवादन-अभिनंदन करता हूँ। आपके चरणों में प्रणाम !''

– श्री रमेशचन्द्र पोखरियाल 'निशंक',

मुख्यमंत्री, उत्तराखंड। ☐

सत्य साँईं बाबा के देहविलय पर पूज्य बापूजी का श्रद्धांजलि-संदेश

सत्य साँईं बाबा के निधन पर पूज्य बापूजी ने श्रद्धांजलि-संदेश देते हुए कहा कि बाबा का शरीर आज हमारे बीच नहीं है परंतु उनके सिद्धांतों, सेवाकार्यों के रूप में बाबा आज भी हमारे बीच हैं। संदेश देते हुए बापूजी भावविभोर हो गये और कहा कि सरकार को चाहिए कि बाबा के आश्रम की व्यवस्थाएँ ट्रस्ट एवं भक्तों के हाथ में ही रखे, क्योंकि जो व्यवस्था भक्त भावना से करते हैं वह व्यवस्था कर्मचारी नहीं कर सकते। बाबा के निधन से व्यथित उनके भक्तों को सांत्वना देते हुए पूज्यश्री बोले कि बाबा के भक्तजन धैर्य व साहस रखें। बाबा का शुभ संकल्प एवं आशीर्वाद हमेशा उनके साथ है।

पूज्य बापूजी के सत्संग में उपस्थित लाखों भक्तों ने मौन रखकर बाबा को श्रद्धांजलि दी।

वैवाहिक विज्ञापन वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु । आपके कुल में सदैव हरिभक्ति बनी रहे

सोनी (मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार) जाति, रंग गेहुँआ, २५/५'-६'', शिक्षा-१२वीं, दीक्षा-२००८ सूरत में, व्यवसाय-सुपरवाइजर (सेलो पेन कम्पनी में), उदनखेड़ी, जि. राजगढ़ (म.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए । फोन : 09300194628.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3410)

राजपूत जाति, भारद्वाज गोत्र, रंग गोरा, २८/५'-२'', शिक्षा -१२वीं, एन.आई.एफ.टी. (दिल्ली) दीक्षा - २००८ देहरादून में, व्यवसाय- टेक्सटाइल डिजाइनर (प्राइवेट कम्पनी में), रुड़की जि. हरिद्वार (उत्तराखण्ड) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए । फोन : 09410507203.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3415)

साहू तेली जाति, मतोन्या गोत्र, ३१/५'-११'', शिक्षा - बी.ए.एम.एस. (आयुर्वेद) क्लीनिकल रिसर्च में डिप्लोमा (दिल्ली से) दीक्षा-२००४ सागर में, व्यवसाय- क्लीनिकल रिसर्च कोऑर्डिनेटर , सागर (म.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए । फोन : 08817502485.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3416)

साहू (तेली) जाति, मतोन्या गोत्र, रंग गेहुँआ, ३३/५'-७'', शिक्षा-एम.फार्मा. (जापान से पीएच.डी.), दीक्षा-१९९९ भोपाल में, व्यवसाय - रिसर्चर (रिसर्च पोस्ट डाक्टोरल जापान में), सागर (म.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए । फोन : 08817502485.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3417)

सिंधी (बिलोची) जाति, रंग गोरा, ३०/५'-८'', शिक्षा - बी.कॉम., दीक्षा - १९९९ अहमदाबाद में, निजी व्यवसाय, उदयपुर (राज.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए । फोन : 09414473792.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3418)

अग्रवाल वैश्य जाति, गोयल गोत्र, रंग गेहुँआ, २७/५'-४'', शिक्षा-एम.ए. (द्वितीय वर्ष अध्ययनरत), दीक्षा - २००० सूरत में, अंगुल (ओड़िशा) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए । फोन : 09937231279.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3419)

सिंधी जाति, रंग गोरा, ३०/५'-८'', शिक्षा-बी.कॉम., दीक्षा-२००२ अहमदाबाद में, व्यवसाय - हरि ॐ ट्रेडर्स (किराना व सुपारी व्यवसाय), सिंदेवाही जि. चंद्रपुर (महा.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए । फोन : 09421725852.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3420)

ठक्कर लोहाना जाति, रंग गोरा, २५/५'-८'', शिक्षा - एच.एससी., दीक्षा-२००७ कच्छ में, व्यवसाय - इलेक्ट्रिक की दुकान, भचाऊँ जि. कच्छ (गुज.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए । फोन : 09879224437.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3422)

कलार जाति, नेवरा गोत्र, रंग गोरा, २४/५'-४'', शिक्षा - १०वीं, दीक्षा - १९९९ अहमदाबाद में, रायपुर (छ.ग.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए ।
फोन : 09827462780.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3423)

दर्जी जाति, रंग गोरा, २६/५'-४'', शिक्षा-बी.ए., दीक्षा - २००८ बड़ौदा में, व्यवसाय- नौकरी (बी.पी.ओ. फाइनेन्शियल सेक्टर में), बड़ौदा (गुज.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09904187101.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3424)

क्षत्रिय (सैंधवार) जाति, गर्ग गोत्र, रंग गेहुँआ, २६/५'-८'', शिक्षा - बी.ए., दीक्षा-२००५ अहमदाबाद में, व्यवसाय-रेडीमेड कपड़ों के थोक विक्रेता, गोरखपुर (उ.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए । फोन : 09451805306.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3339)

अग्रवाल (वैश्य) जाति, बंसल गोत्र, रंग गेहुँआ, ३०/५'-१०'', शिक्षा-एच.एससी., दीक्षा-२००५ भोपाल में, व्यवसाय - प्रॉपर्टी डीलर, छतरपुर (म.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए ।
फोन : 09584615487.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3426)

मांगलिक जैसवाल (कलवार) जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा, २९/५'-४'', शिक्षा-बी.ए.बी.एड, दीक्षा - २००५ अमेठी में, व्यवसाय- मेडिकल स्टोर (निजी व्यवसाय) अमेठी जि. सुल्तानपुर (उ.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : 09616529449.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3427)

वैश्य (बंगाली) जाति, शांडिल्य गोत्र, रंग गोरा, ३०/५'-५'', शिक्षा - एम.बी.ए., दीक्षा -२००५ नासिक में, व्यवसाय - नौकरी (स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक में), मुंबई (महा.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए । फोन : 09920817363.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3428)

वैश्य (बंगाली) जाति, शांडिल्य गोत्र, रंग गोरा, शिक्षा-आई.कॉम., दीक्षा-२००९ नासिक में, व्यवसाय-मेडिकल दुकान, पटना (बिहार) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए ।
फोन : 08986909289.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3429)

क्षत्रिय जाति, कश्यप गोत्र, रंग गेहुँआ, २९/५'-११'', शिक्षा - बी.ई., एम.बी.ए., दीक्षा-२००५ मुंबई में, व्यवसाय-सर्विस, मुंबई (महा.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए ।
फोन : 08080370083.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3430)

कुर्मी जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा, २५/५', शिक्षा - एम.एससी. (बायो.), पी.जी.डी. सी.ए. एवं टेली, दीक्षा - २००५ रायपुर में, रायपुर (छ.ग.) निवासी (मूल निवासी-सतना म.प्र.) युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए ।
फोन : 08349449910.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3431)

कनौजी कोइरी जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा, १८/५'-४'', शिक्षा - आई.ए., सिलाई कोर्स, दीक्षा-२००३ दिल्ली में, सिवान (बिहार) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए ।
फोन : 08092707779.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-3432)

विभिन्न आश्रमों व समितियों द्वारा किये गये सेवाकार्यों की एक झलक

❖ संकीर्तन यात्राएँ एवं भंडारे ❖

खमरिया जि. भदोही, शक्तिनगर जि. सोनभद्र, लखीमपुर खीरी, इलाहाबाद, आगरा (उ.प्र.); वराछा जि. सूरत (गुज.); भवानीपटना जि. कालाहाण्डी, नायगढ़, झारसुगुड़ा (ओड़िशा); कुरखेड़ा जि. गडचिरोली, खामगाँव जि. बुलढ़ाणा, भुसावल जि. जलगाँव, पुणे, थाने (महा.); निम्बाहेडा जि. चित्तौड़गढ़, सीकर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, दौसा, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर (राज.); हमीरपुर (हि.प्र.); कठुआ (जम्मू-कश्मीर); सागर, ग्वालियर, रीवा (म.प्र.); हाँसी जि. हिसार (हरियाणा); काठमांडू (नेपाल) में संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं।

महेन्द्रगढ़, कैथल, यमुनानगर (हरियाणा); संगरूर (पंजाब); एटा, शाहजहाँपुर (उ.प्र.); हरिपुरधार जि. सिरमौर (हि.प्र.); चीजगाम जि. नवसारी, गोधरा (गुज.); यवतमाल (महा.); बैंगलोर (कर्नाटक) में संकीर्तन यात्रा एवं भंडारों का आयोजन किया गया।

थराद जि. बनासकांठा (गुज.); अजमेर (राज.); पुणे (महा.); पंचकुला (हरियाणा); केराकत जि. जौनपुर, इटावा, बुलंदशहर, बरेली, एटा (उ.प्र.); आरा जि. भोजपुर (बिहार); धनबाद, राँची (झारखण्ड); टीकमगढ़ (म.प्र.); ब्रह्मपुर जि. गंजाम (ओड़िशा) के गरीबों में भंडारों का आयोजन किया गया तथा अनाज, वस्त्र, मिठाई, बर्तन, राहत सामग्री, छाता, जूता, टोपी, सत्साहित्य आदि का वितरण किया गया।

❖ शरबत/छाछ वितरण ❖

लालसोट जि. दौसा, झुंझुनू (राज.); सासाराम जि. रोहतास (बिहार); इलाहाबाद, फर्रूखाबाद, फतेहपुर (उ.प्र.); कलोल जि. गांधीनगर (गुज.); बोईसर जि. थाने (महा.); कैथल, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा); धनबाद (झारखण्ड) में शरबत-वितरण किया गया। **आकोट जि. अकोला, आम्बीवली जि. थाने, औरंगाबाद (महा.); ब्रह्मपुर जि. गंजाम (ओड़िशा)** में छाछ-वितरण तथा **साकोली जि. भंडारा (महा.); बुलंदशहर, फतेहपुर (उ.प्र.); भरतपुर (राज.)** में ग्रीष्म ऋतु की समाप्ति तक निःशुल्क जल-प्याऊ का शुभारम्भ किया गया।

❖ अस्पतालों में फल-वितरण ❖

सनावद जि. खरगोन, कायथा जि. उज्जैन, सतना (म.प्र.); डिडवीं टिक्कर जि. हमीरपुर (हि.प्र.); हापुड़ जि. गाजियाबाद, बुलंदशहर, एटा (उ.प्र.); रतननगर जि. चुरु, निवाई जि. टोंक, बीकानेर, चुरु (राज.); झालोद जि. दाहोद, साबरमती-अहमदाबाद (गुज.); साकोली जि. भंडारा, अमरावती, नासिक (महा.) के अस्पतालों में फल, दवाई, दलिया, सत्साहित्य आदि वितरित किये गये।

❖ विद्यार्थियों में नोटबुक-वितरण ❖

गोवा; मंडी गोविंदगढ़ जि. फतेहगढ़ साहिब, फगवाड़ा (पंजाब); गोलवाँ रैहन जि. काँगड़ा (हि.प्र.); चंडीगढ़ के विद्यार्थियों में नोटबुक, पेन, पेंसिल, सत्साहित्य आदि का वितरण किया गया।

❖ विविध सेवाकार्य ❖

लालसोट जि. दौसा, चुरु, अजमेर (राज.) में गायों को चारा दिया गया।

सातारा (महा.); फगवाड़ा (पंजाब) में नीम, तुलसी, पीपल, बड़ आदि स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिए परम हितकारी वृक्षों का आरोपण किया गया।

चन्देरी जि. अशोकनगर (म.प्र.); हैदराबाद (आं.प्र.) में 'निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर' एवं 'स्वास्थ्य शिविर' का आयोजन किया गया।

हापुड़ जि. गाजियाबाद, गजरौला जि. जे.पी. नगर (उ.प्र.) में कुष्ठाश्रम के कुष्ठरोगियों में अन्न तथा फल वितरण किया गया।

कानपुर (उ.प्र.) में कुछ समय पूर्व गंगा नदी में आयी भीषण [illegible] से पीड़ित लोगों के लिए १० दिन तक अन्[illegible]न किया गया। ❐

पूज्य बापूजी द्वारा प्रेरित युवा सेवा संघ द्वारा 'जीवन विकास अभियान'

पूज्य बापूजी के ७१वें अवतरण-दिवस के निमित्त देश भर में स्थानीय युवा सेवा संघों के द्वारा **'जीवन विकास अभियान'** के तहत जेलों में सत्संग एवं सत्साहित्य-वितरण कार्यक्रम किये गये। जिनमें अहमदाबाद, भावनगर **(गुज.)**; बरेली, कानपुर, गोंडा, झाँसी, लखनऊ, गाजियाबाद **(उ.प्र.)**; हिसार, भिवानी, कैथल, कुरुक्षेत्र **(हरि.)**; रायपुर, भिलाई **(छ.ग.)**; सोलन **(हि.प्र.)**; कोलकाता **(प.बं.)**; भोपाल, ग्वालियर **(म.प्र.)**; टिटिलागढ़ **(ओड़िशा)**; जालंधर **(पं.)**; जयपुर, श्री गंगानगर **(राज.)**; मुजफ्फरपुर **(बिहार)** तथा **दिल्ली** आदि कई स्थानों पर कैदियों के उत्थान हेतु सेवाकार्य किये गये। इनके खास उद्देश्य थे - ✻ कैदियों में सद्भावना एवं सदाचार के संस्कार जगाकर उनकी आपराधिक वृत्ति को दूर करना। ✻ सत्साहित्य द्वारा उनके नकारात्मक विचारों में सकारात्मक बदलाव लाना। ✻ कोई भी व्यक्ति जन्म से अपराधी नहीं होता, परिस्थितियाँ, कुसंग और वासना उसे वैसा बनाती हैं। पूज्यश्री के सत्संग व सत्साहित्य द्वारा कैदियों को इनसे अप्रभावित रहने की युक्ति व हिम्मत देना।

इसके अलावा स्वास्थ्य-वर्धक 'हास्य-प्रयोग', 'हे प्रभु ! आनंददाता !...' प्रार्थना और सत्संग की प्रेरणादायी बातों से कैदियों को खूब प्रोत्साहन भी दिया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी कैदियों के चेहरे पर जो आनंद, शांति और संतोष झलक रहा था, वह देखते ही बनता था। मानो, वे सब पूज्य बापूजी को मन-ही-मन धन्यवाद दे रहे हों कि आपने हमारे अंधकार और अकेलेपन से भरे जीवन में ज्ञान, भक्ति और प्रेम का प्रकाश भर दिया। कैदियों के लिए इस अनुपम सुयोग का माध्यम बननेवाले 'युवा सेवा संघ' के सदस्य भी धन्यता का अनुभव कर रहे थे। सभी जेलों के जेल-प्रभारियों ने भी उन्हें हार्दिक बधाई व धन्यवाद दिया।

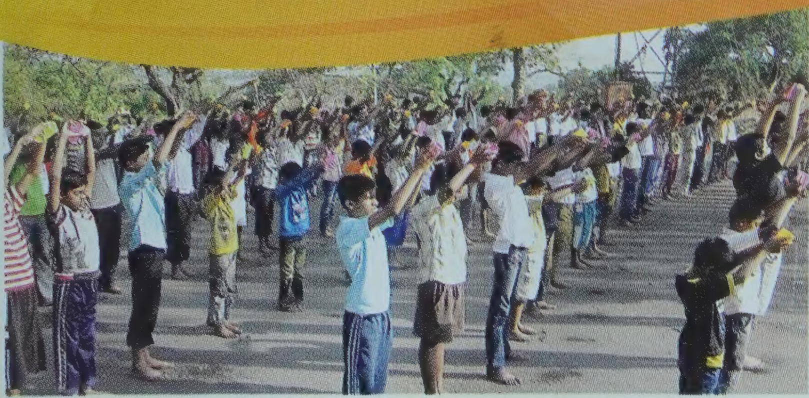
e-mail: yss.sewa@gmail.com, website: yss.ashram.org ❐

गरीबों में हॉटकेस वितरण

अपने सत्संग-कार्यक्रमों हेतु देश भर में भ्रमण के दौरान पूज्य बापूजी ने देखा कि बहुत से गरीब मजदूर या साधारण नौकरी पेशे के लोग अपना दोपहर का भोजन स्टील या एल्यूमीनियम के डिब्बों में ले जाते हैं, जो दोपहर तक ठंडा हो जाता है। ठंडे भोजन से गैस तथा पेट की अनेक बीमारियों से वे अनजाने में ही ग्रस्त हो जाते हैं। उनकी यह दशा देखकर करुणासिंधु बापूजी का संतहृदय द्रवित हो गया और उन्होंने ऐसे लोगों को भोजन गर्म रखनेवाला 'हॉटकेस' (टिफिन) बिल्[illegible] मुफ्त में मिले, ऐसी व्यवस्था [illegible] का आदेश आश्रमों व समितियों को दिया है। 'अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति' के माध्यम से अब तक लगभग ३५ हजार 'हॉटकेस' नागपुर, रायपुर, छिंदवाड़ा, इन्दौर, भोपाल, ग्वालियर, वाराणसी, आगरा, कानपुर, बलिया, गोरखपुर, बरेली, सहारनपुर, देहरादून, मुरादाबाद, फैजाबाद, जौनपुर, जमशेदपुर, राँची, चण्डीगढ़, जयपुर, बीकानेर, भरतपुर, कोटा, चित्तौड़गढ़, पटना, उल्हासनगर, औरंगाबाद, कोल्हापुर, सोलापुर, अहमदनगर, कोलकाता, हावड़ा, भुवनेश्वर, बैंगलोर, अहमदाबाद, सूरत तथा बड़ौदा भेजे जा चुके हैं तथा बँटने भी शुरू हो गये हैं। गरीब लोग भी अमीरों की तरह गरमागरम भोजन करने का आनंद पायें तथा निरोग रहें - बापूजी के ऐसे शुभ संकल्प से वे गरीब अभिभूत हो रहे हैं। यह सेवाकार्य वर्षों तक चलता रहेगा। यह इसकी शुरुआत है। लाखों-लाखों लोग इससे लाभान्वित होंगे, ऐसी यह योजना है। ❐

जो धर्म-अनुसारी जीवन जीता है, उसमें सत्संग का बीज फलता है, फूलता है और भगवत्प्राप्ति के फल लगते हैं। - पूज्य बापूजी

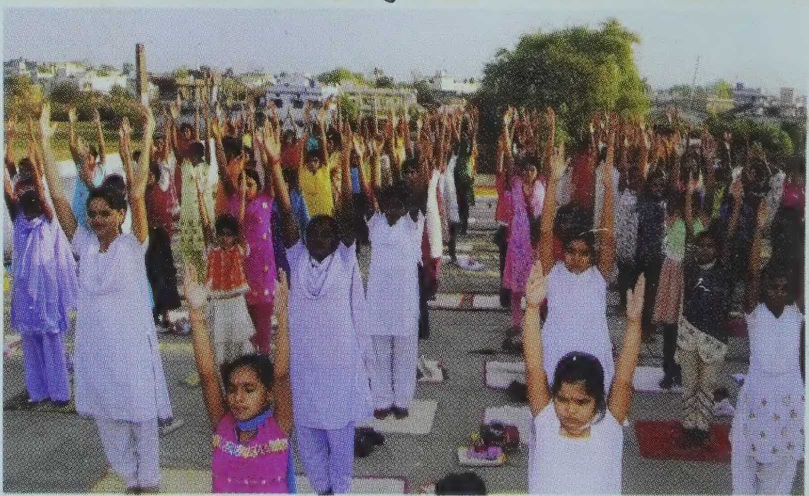
विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों की झलकियाँ




कोल्हापुर (महा.) में भगवान सूर्य को अर्घ्य देते व अहमदाबाद (गुज.) में बुद्धिशक्तिवर्धक प्रयोग करते हुए विद्यार्थी।




भगवत्प्रार्थना में तल्लीन खंडवा, जि. रायपुर (छ.ग.) के बालक तथा भगवन्नाम-कीर्तन करती हुईं नासिक (महा.) की बालिकाएँ।

आरोग्यवर्धक 'स्थलबस्ति' करते बार्शी, सोलापुर (महा.) के विद्यार्थी तथा यौगिक प्रयोग सीखतीं बालाघाट (म.प्र.) की बालिकाएँ।




स्मृतिशक्तिवर्धक 'भ्रामरी प्राणायाम' करते हुए आलंदी, जि. पुणे (महा.) व कोटा (राज.) के नौनिहाल।

स्कूली छुट्टियों में विद्यार्थी पा रहे, हँसते-खेलते ससंस्कार-ज्ञान।
कर संकल्प दिव्य जीवन का, देश का भावि [illegible] महान ।।

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/200
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2011
LWPP No. CPMG/GJ/45/200
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-1
Permitted to Post at AHD-PS
from 18th to 25th of E.M.

जन-जन को भक्तिरस में सराबोर करतीं

पूज्य बापूजी के अवतरण दिवस पर निकलीं हरिनाम संकीर्तन यात्राएँ


सागर (म.प्र.)


थाने (महा.)


शाहजहाँपुर (उ.प्र.)


कोलकाता (प.बंगाल)


गोधरा (गुज.)


ग्वालियर (म.प्र.)


भीलवाड़ा (राज.)


पुणे (महा.)

स्थानाभाव के कारण यहाँ कुछ ही ... खा पा रहे हैं, अन्य अनेक स्थानों की तस्वीरों हेतु आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org दे